बाबूजी की कोठरी

अब भी कभी-कभी
जब मन बेहद परेशान
हो जाता है..
बाबूजी भले ना रहे पर
फिर भी उनकी तलाश में
निकल जाता हूं गांव तक ,
उनकी कोठरी में अलमारी पर
ढेरों बिखरे पड़े हैं ,
उनके होने के निशान ,
उनके हाथ के लिखे पर्चे
जिस पर लिखे हैं,
घर और मेरे खर्चे के सामान ,

सहन में अभी खटिया रखी है
यहां से बाबूजी बताते थे ,
यह कौन यह कौन है तारा..
उनके ज्ञान से देखते थे
दुनिया जहान सारा ,

जहां ढिबरी रखते थे
उस दियरखे पर ,
अब भी थोड़ा काला है,
जो बताता है कि अभाव सही
लेकिन दिल से हमको पाला है,
एक कोने में बाबूजी के
लोहे के बक्से में पड़ी हुई है,
कुछ पुराने कपड़े, कुर्ते ,धोतिया ,
छूने भर से लगता है कोई
ऊष्मा मन तक पहुंच रही है,

कुछ देर कोठरी में गुजार लेता हूं
बाबूजी को खुद में उतार लेता हूं ,
मन हल्का हो जाता है जब भी
जिंदगी से भार लेता हूं ,

जब वापस लौटता हूं तो
अकेले नहीं लौटता ,
बाबूजी भी साथ आ जाते हैं
मेरे साथ मेरे शहर तक और
देर तक मुझ में रहते हैं

रेखा शाह आरबी

गांव नहीं भूलता

इन कंक्रीटो के जंगल में
गांव वाली बात कहां,
दिन है इसके धुऐ वाली
तारों वाली रात कहां,
सब डूबे अपने फिक्र में
बस अपने जिक्र में
बैठै मचानों के हल्ला -गुल्ली
वह बेफिक्र सी शाम कहां,
वह नीम के डालों के झूले
सीवान के माटी के टीले
वो पगडंडी पर चलना
वो बैठक वाली आम कहां,
ले आओ पुरवाई थोड़ी
गांव की चौपालों से जाकर
इन मखमली बिस्तरो पर
इस मन को आराम कहां,
आज मन फिर दौड़ रहा है
गंगा घाटो के पक्के याराने
वो अल्हड़ ,मस्ती वाले छींटे
वह हमारे यार पुराने,
मैं अपने संग ही लाया
भीतर एक गांव बसाऐ
चकाचौंध में भी ना भूलें
मुझको मेरा गांव बुलाए

ISSN:2583-8849